बच्चे की बगिया

उम्मीद से भरी कहानी

माइकल, हिंदी: विदूषक

उस छोटे लड़के की दुनिया पूरी तरह उजड़ कर तबाह हो गई थी. सब तरफ मलबा और पत्थर बिखरे पड़े थे. कंटीले तारों की बाड़ और सैनिकों की वजह से वो उस ठंडी पहाड़ी पर नहीं जा सकता, जहाँ वो कभी अपने पिताजी के साथ जाता था. क्या पौधे का एक छोटा अंकुर इस स्याह माहौल में उम्मीद की एक किरण जगा सकेगा?

यह सरल, सुन्दर, जीवनदाई चित्र-कथा घाव पर मलहम लगाती है और उम्मीद जगाती है. *बच्चे की बगिया* मनुष्य की आत्मा को एक श्रद्धांजली है.

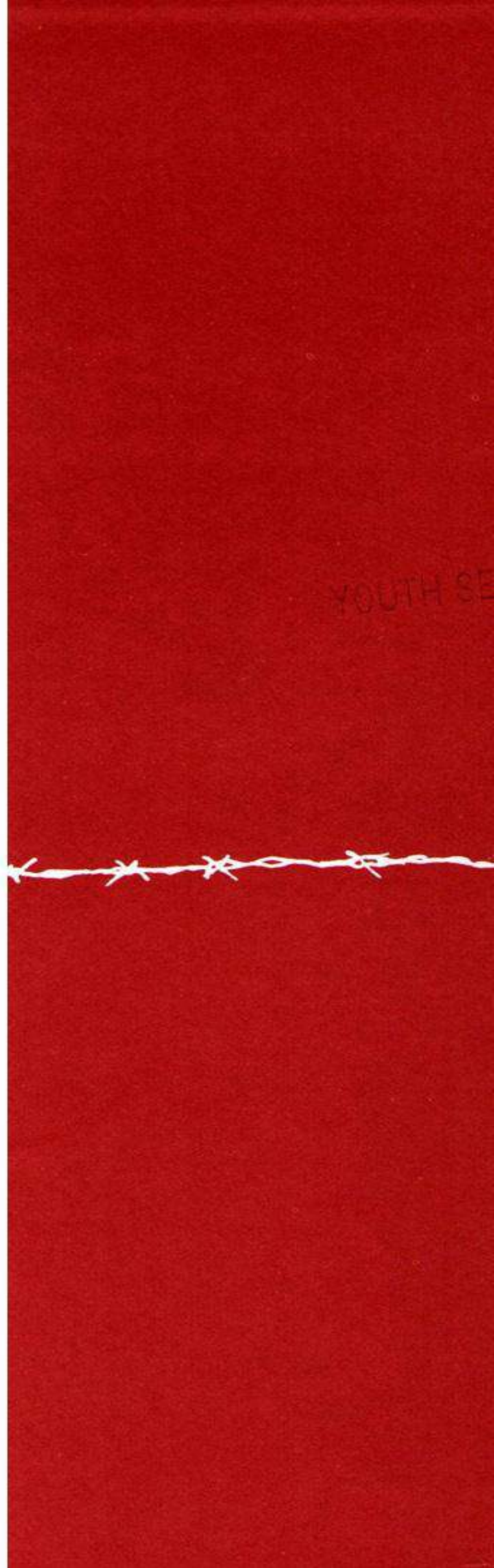

रात की बारिश के बाद लड़के को कुछ हरा दिखा. पत्थरों और मलबे के बीच उसे एक छोटा अंकुर दिखाई दिया. पौधे ने सूरज को देखने के लिए अपना सिर ऊपर उठाया था.

लड़के ने आसपास की टूटी ईंटों को हटाया जिससे वो नन्हा पौधा कहीं कुचल न जाए. वो पौधा क्या था – फूल या कोई खरपत? उसे बस यह पता था - पौधे को उस बंजर ज़मीन में जिंदा रहने के लिए बहत संघर्ष करना होगा.

फिर इधर-उधर ढूँढने पर लड़के को एक एक पुराना टिन का कनस्तर मिला. उसमें कुछ बारिश का पानी भरा था. उसे वो नन्हें पौधे के पास लाया.

“इसे पी लो,” वो फुसफुसाया. “पी जाओ.”

सूरज आसमान में चढ़ रहा था. पौधे को धूप की झुलसन से बचाने के लिए लड़के ने फटे बोरे और तार की एक सुरक्षा छतरी बनाई.

लड़के की दुनिया - टूटे पत्थरों और मलबे का एक ढेर थी, जो एक तरफ कंटीले तार की बाड़ से घिरी थी. गर्मियों में जब वहां धूल भरी आंधी चलती, तो दूर की पहाड़ियां उस धुंध में चमकती थीं. उन पहाड़ियों में ठंडे पानी के झरने थे, यह लड़के को पता था. लड़का, पिताजी के साथ एक बार वहां गया जो था. पर अब पहाड़ियां, कंटीले तार के उस पार थीं.

अगले कुछ हफ़्तों तक वो अपनी छिपी बगिया की देखभाल करता रहा. जल्दी ही पौधा बढ़कर कंटीले तार की बाड़ के भी ऊपर पहुँच गया. तब लड़के को पता चला कि वो एक बेल थी – अंगूर की बेल.

धीरे-धीरे बेल, तारों की पूरी बाड़ पर फ़ैली. उसके हरे पत्तों से, बेल की नाज़ुक जड़ों को छाँव मिली. उससे बेल और तेज़ी से बढ़ी.

बेल की सुहानी छाँव में चिड़िए और तितलियाँ सुस्ताने आईं.

वे अपने साथ-साथ नए बीज और पराग भी लाईं. धीरे-धीरे बगिया बढ़ी. अब वो किसी से छिपी नहीं रही.

बहुत से छोटे बच्चे उस बगिया की छाँव में बैठने को आते.
धीरे-धीरे वो बगिया बच्चों के खेल का मैदान बन गई.

फिर शामत आई. एक दिन सैनिक आए और उन्होंने सब कुछ उखाड़ कर फेंक दिया. उन्होंने बेल को कंटीली बाड़ के दूसरी ओर एक गड्ढे में फेंक दिया.

लड़का बहुत दुखी हुआ.
ऐसा लगा जैसे वो उस गम को बर्दाश्त नहीं कर पाएगा.

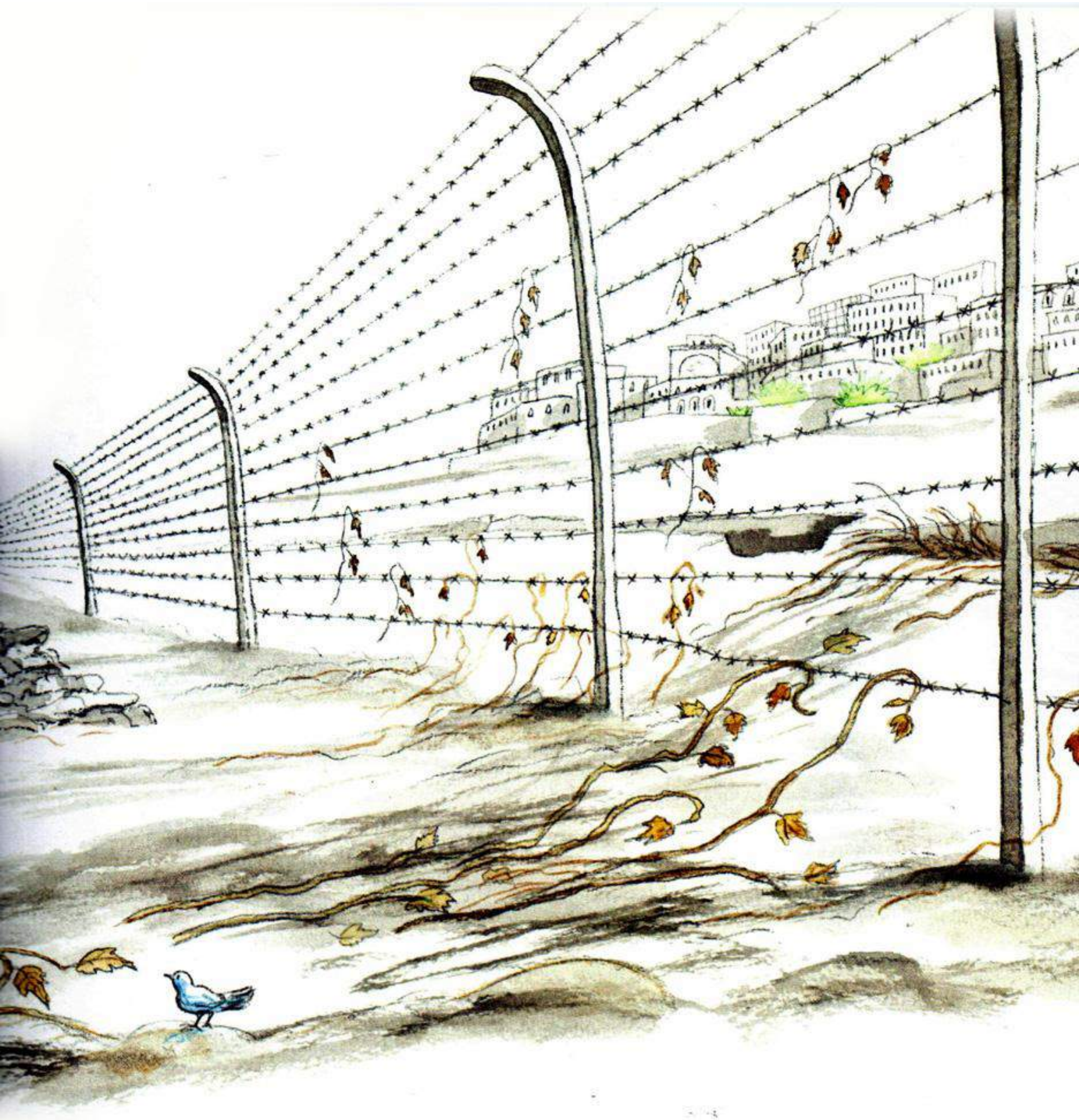

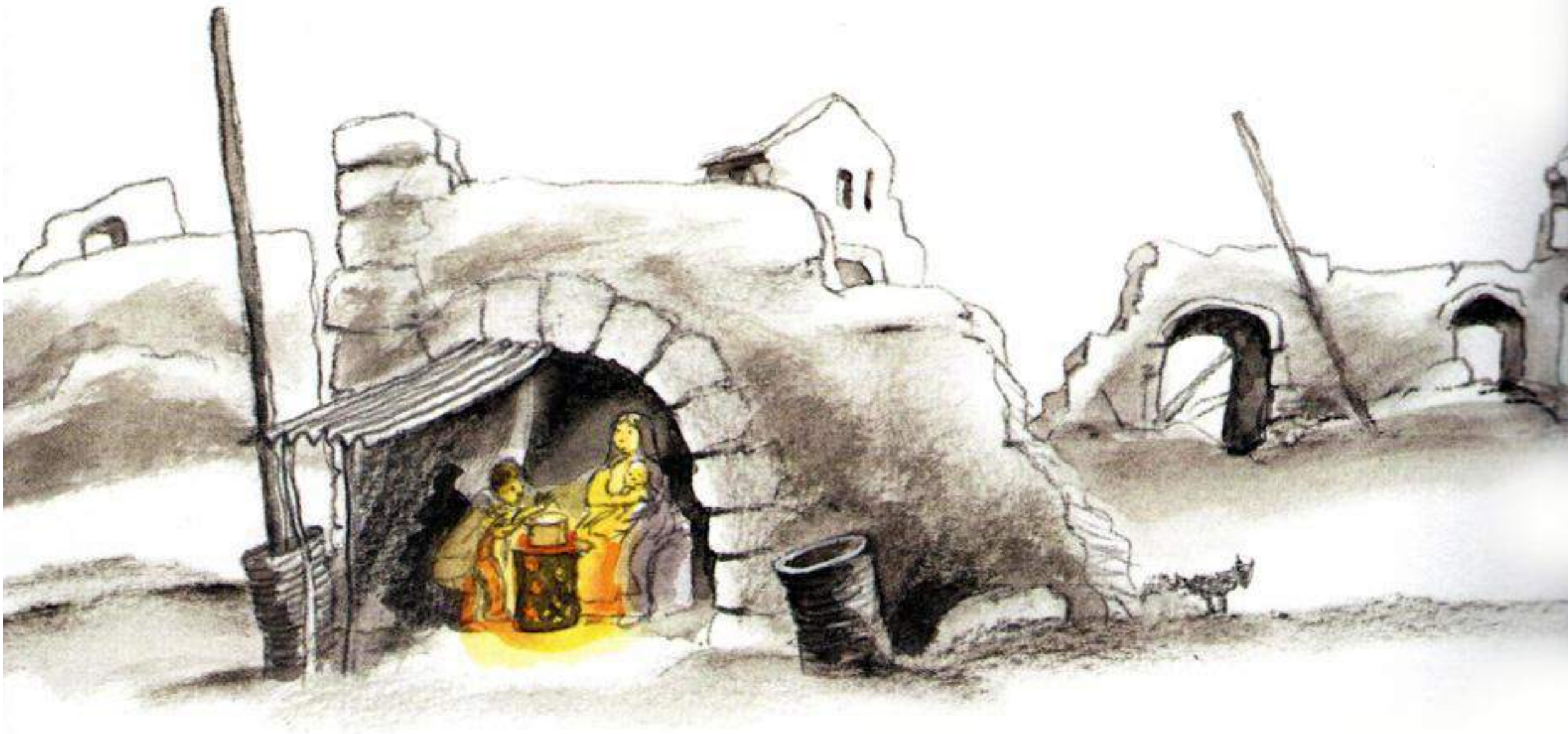

फिर सर्दी आई.

लड़का और उसका परिवार एक टूटे, तहस-नहस घर में, जाड़े और बारिश में ठिठुरते रहे.

उस साल वसंत कुछ देरी से आई. फिर एक रात तेज़ बारिश हुई. अगले दिन लड़के को बाड़ के उस पार के गड्ढे में, पौधों के कुछ हरे कल्ले खिलते दिखे. शायद अंगूर की बेल के कुछ बीज, कड़क सर्दी के बावजूद जिंदा बचे थे. लड़के को नए कल्लों की फ़िक्र हुई. वो उन्हें पानी नहीं दे सकता था. कल्ले, कंटीले तार के उस पार जो थे.

फिर एक शाम को, लड़के ने उस गड्ढे में एक छोटी लड़की को खेलते हुए देखा. उसके हाथ में एक बाल्टी थी और वो नन्हें पौधों पर पानी छिड़क रही थी.

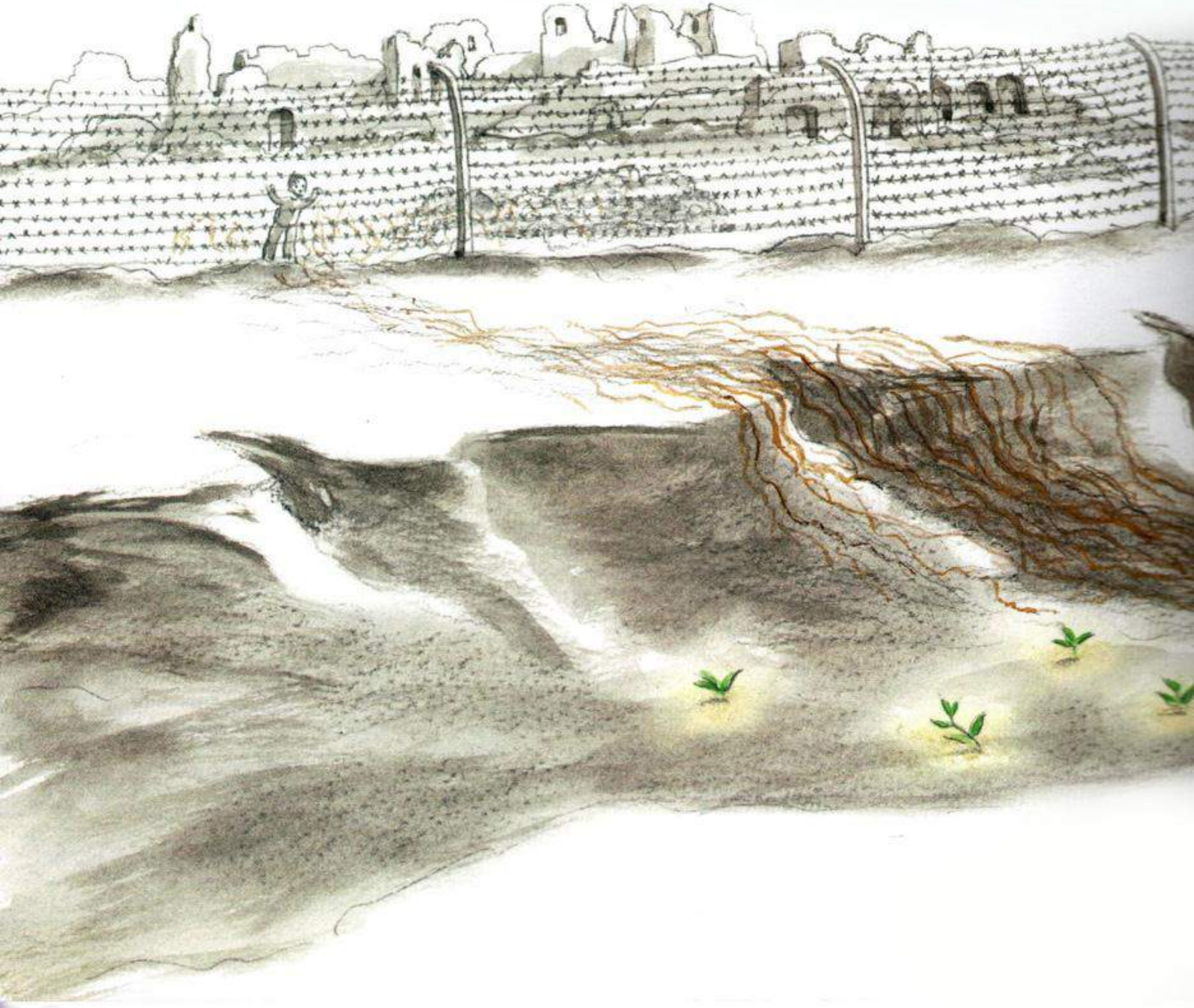

वो लड़की हर शाम वापिस आती. लड़के को डर था कि कहीं पहरेदार उसे देख न लें. पर क्योंकि पौधे उनकी ही तरफ उग रहे थे इसलिए सैनिकों को उनसे कोई ऐतराज़ नहीं था.

जल्दी ही लड़के के उजड़ी बगिया में भी छोटे-छोटे पौधों ने, मिट्टी के ऊपर अपनी गर्दन उठाई.

“देखो!” वो चिल्लाया. “आकर देखो! मेरी बेल अब दुबारा उग रही है!”

लड़का फिर से पानी इकट्ठा करने लगा और अपनी बगिया को सींचने लगा. जल्द ही उसकी तरफ की बेलें, दूसरी ओर लड़की की हरी, कोमल बेलों से जाकर मिलीं. दोनों तरफ की बेलें आपस में गुंथ गईं.

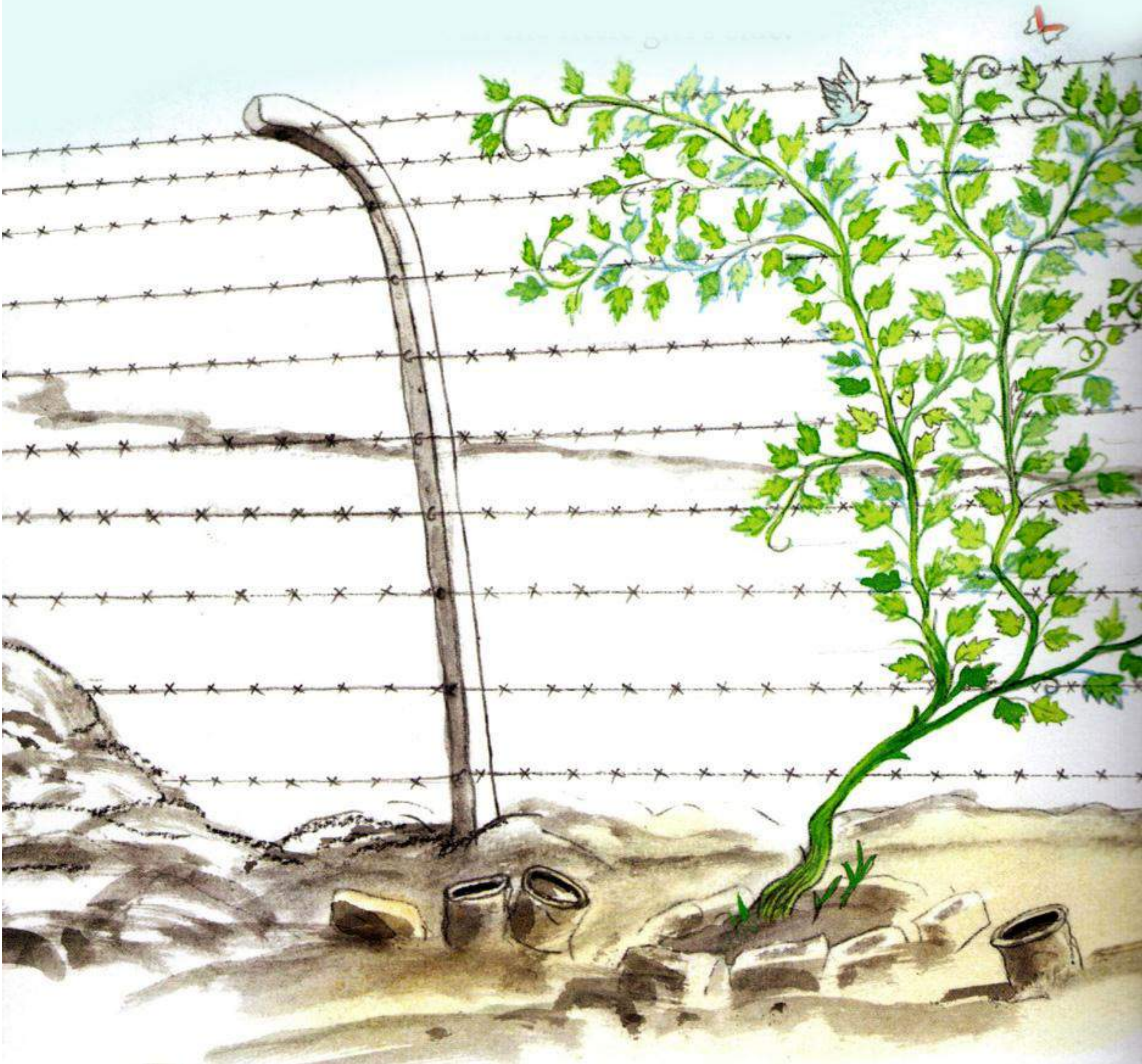

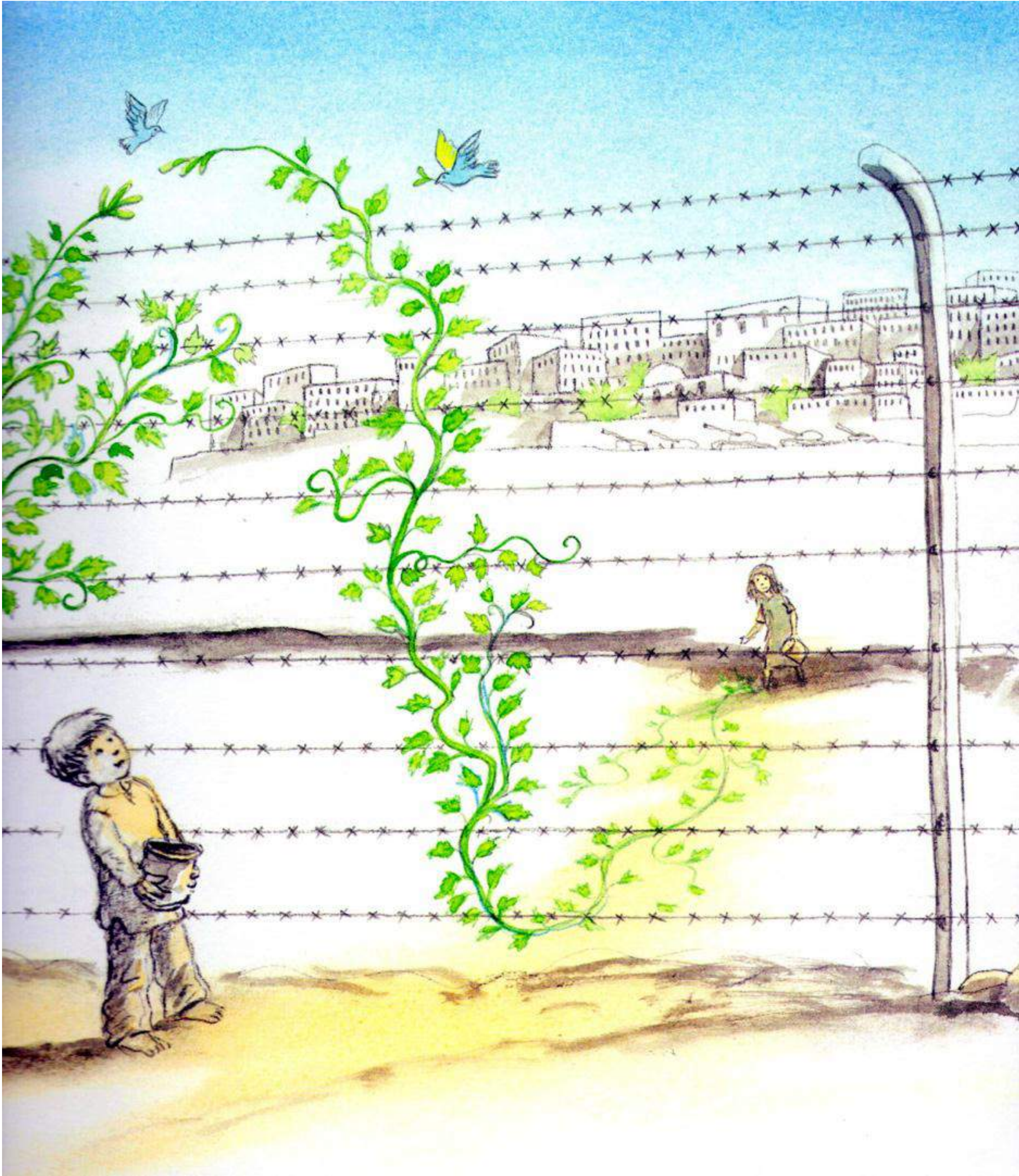

कंटीली तार की बाड़ बेलों की हरी पत्तियों से पूरी तरह ढँक गई.
वो बगिया फिर से चिड़ियों और तितलियों का घर बनी.

सैनिकों को वापिस आने दो, लड़के ने सोचा.
गहरी जड़ें, बीज आगे बढ़ें....

एक दिन कंटीली बाड़ सदा के लिए लुप्त होगी,
तब हम दुबारा पहाड़ियों की सैर कर सकेंगे.